मैं तहे दिल से निराकार परमपिता परमात्मा शिव प्रति आभार प्रकट करता हूँ

- परमधाम से इस भ्रष्टाचारी पतित दुनिया में अवतरित होकर साकार माध्यम ब्रह्मा, एदम अथवा आदम द्वारा ईश्वरीय ज्ञानामृत का पान कराने के लिये ।

- पुरानी विकारी दुःखदायी दुनिया को बदल १००% पवित्रता, सुख शान्ति वाली नयी निर्विकारी दुनिया में परिवर्तन करने का दिव्य कार्य निष्पादन करने के लिये ।

- सभी आत्माओं व ५ तत्वों सहित प्रकृति को पावन बनाने के लिये ।

- अपना बच्चा, स्टूडेंट व फॉलोअर बनाने के लिये ।

- रूहानी परमपिता के रूप में ईश्वरीय वर्सा व खजाना देने के लिए, रूहानी परमशिक्षक के रूप में रचयिता और रचना, तीनों लोक व काल का ज्ञान देने के लिए और परमसतगुरु के रूप में वरदान अथवा ब्लेसिंग देने के लिये ।

विश्व की अन्य आत्मायें भी आपको पहचाने और ईश्वरीय वर्सा व खजाने का मेरे जैसा लाभ उठावें ताकि अंतिम समय उन्हें पश्चाताप ना करना पड़े । अभी नहीं तो कभी नहीं

आखिर में, आओ हम सब मिलकर नशे से यह गीत गायें वाह बाबा वाह, वाह बच्चे वाह और सारे विश्व में यह वायब्रेशन्स फैलाएं कि मेरा बाबा आ गया ।

(बाबा - याने सर्व आत्माओं का रूहानी परमपिता चाहे वे किसी भी आयु अथवा धर्म से सम्बंधित हों, बच्चे – याने विश्व के सभी रूहानी बच्चे)

प्यारे पारलौकिक रूहानी पिता शिव बाबा को दिल से पदम गुणा शुक्रिया व नमन

बी. के अनिल कुमार
(Godly child & student)

P.T.O

परमात्मा शिवबाबा के बारे में स्वानुभव

१. वह उसको पूर्ण आदर देता है जो उसपर भरोसा रखते हैं, निष्ठापूर्वक पढ़ाई करते हैं व इमानदारी से धारणा को फॉलो करते हैं ।

२. वह उसे पूर्ण स्नेह देता है जो उस पर पूर्ण समर्पित हैं और जिनको उस पर पूर्ण आस्था है अर्थात जो किसी भी सुखदायी अथवा विपरीत परिस्थितियों में उसका साथ पकड़ कर रखता है ।

३. वह स्वार्थ से परे है अर्थात पूर्ण निःस्वार्थी है ।

४. वह पूर्ण निरहंकारी है ।

५. वह किसी को भी माध्यम बनाकर मार्गदर्शन दे सकता है चाहे वह अनपढ़ ही हो ।

६. उसमें उल्टा को सुल्टा करने की शक्ति है ।

७. वह कर्म बंधन से परे होते हुए भी बहुत व्यवस्थित, निष्ठावान, समयबद्ध और अपने ड्यूटी प्रति एकदम स्पष्ट है ।

८. वह किसी को भी निमित्त बनाकर अपना कार्य करा लेता है और उसका नाम बाला कर देता हैं ।

९. वह किये गए सेवा का एक भी फल अपने पास नहीं रखता बल्कि सूद समेत किसी भी तरीके से वापस लौटा देता है ।

१०. वह भली भांति जानता है कि सही चीज़ सही समय पर कैसे किया जाता है ।

११. वह अधूरे कार्य को रोके रखता है और तब तक नहीं छोड़ता जबतक कि वह कार्य पूरा ना हो जाये ।

आखिर में, सर्वोच्च सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलन की इस नायब घड़ी को मैं अंगीकार करता हूँ जो सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, सृष्टि के रचयिता हैं, जो ५००० वर्ष के विश्व नाटक चक्र में एक बार आते हैं । यह श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ अवसर इस विश्व नाटक चक्र में मात्र एक बार ही घटित होता है ।

बी. के अनिल कुमार
(Godly child & student)